International Journal of Education and Science Research Review
ISSN 2348-6457
www.ijesrr.org October- 2018, Volume-5, Issue-5 Email- editor@ijesrr.org

माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता एवं प्रतिबद्धता का उनके शिक्षण पर प्रभाव का अध्ययन

डॉ0 कृष्ण पाल
सहायक आचार्य
शिक्षा विभाग
हर्ष विद्या मन्दिर (पी0जी0) कॉलिज रायसी, हरिद्वार

सारांश:
राष्ट्र के सामने आज एक सबसे बड़ी चुनौती यह है कि सर्वव्यापक शिक्षा अनेक योजनाओं के क्रियान्वयन के पश्चात् भी चौदह वर्ष तक की उम्र के प्रत्येक बालक को सुलभ नहीं है। अधिकांश विद्यालयों में दी जा रही शिक्षा की गुणवत्ता निम्न स्तर की है। विद्यालयों में अध्ययन का माहौल ही नहीं है, विद्यालय समुदाय के सम्बन्ध प्रगाढ़ भी नहीं रह गये हैं।
कुंजी शब्द: शिक्षण दक्षता एवं प्रतिबद्धता

प्रस्तावना:
राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद एक्ट–1993 द्वारा अध्यापक शिक्षा के विभिन्न पाठ्यक्रमों में अध्ययन के जो न्यूनतम् स्तर निर्धारित किए हैं, उनका उद्देश्य शिक्षकों में योग्यताओं का विकास करने के अलावा उनमें समानता व सामाजिक न्याय के विकास के साथ विद्यार्थियों की उपलब्धियों की गुणवत्ता में सुधार करना है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के दृष्टिकोण:

1- शिक्षा की दृष्टि से:
भारतीय दर्शन के अनुसार शिक्षा का कार्य व्यक्ति में ज्ञान के साथ–साथ बुद्धि तथा जागरूकता का विकास करना भी था। उसके व्यक्तित्व का निर्माण इस प्रकार से किया जाता था कि उसकी सोच समाज के विपरीत न होकर समाज के विकास में सहायक सिद्ध होती थी। शिक्षा द्वारा शारीरिक व मानसिक विकास के साथ–साथ आध्यात्मिक विकास पर भी बल दिया जाता था। किन्तु उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति पूर्णतः नहीं हो पा रही हैं, जिसके निम्न कारण हैं–

- हमारा शैक्षिक संगठन/तन्त्र गुणवत्ता की उपलब्धि में सफल नहीं हो पा रहा है।
- वर्तमान शिक्षा प्रणाली में अधिकारों की माँग अधिक हो रही है, परन्तु शिक्षा प्रशासन अपने कर्तव्यों के प्रति उदासीन है।
- वर्तमान शिक्षा तन्त्र आर्थिक कठिनाईयों से गुजर रहा है। इसकी कार्यप्रणाली सरकारों पर निर्भर होती है।
- उच्च शिक्षा प्रणाली का प्रबन्धन स्थिर, अव्यावसायिक और दृढ़ हो गया है।
- यद्यपि संस्थानों की संख्या में वृद्धि हुई है, लेकिन उच्च शिक्षा जनसंख्या के केवल 5 प्रतिशत छात्र ही प्राप्त कर पा रहे हैं।
- वर्तमान में शिक्षा और अर्थव्यवस्था एक दूसरे से घनिष्ठ होते जा रहे हैं, जिसका परिणाम बेरोजगारी में वृद्धि और रोजगार हेतु योग्य व्यक्तियों की कमी के रूप में सामने आ रहा है।

2- शिक्षकों के दृष्टिकोण से:
शिक्षकों से समाज की अपेक्षायें बहुत ही उच्च रही हैं। योग्य व प्रतिबद्ध शिक्षक की यह विशेषता होती है कि वह विषयवस्तु में निपुण होता है, भारत में उभरते हुए सामाजिक परिदृश्य के अनुकूल

योग्यताओं और गुणों से युक्त होता है। उसमें सामाजिक न्याय और समता की गहरी समझ होती है। शिक्षक वह है जो–

- विद्यार्थियों द्वारा पसन्द किया जाता हो, समाज द्वारा सराहा जाता हो और सहयोगियों का प्रिय हो।
- विनम्र हो और राष्ट्र निर्माण प्रक्रिया में भागीदार होने के प्रति उसमें आवश्यक आत्मविश्वास और आत्मबोध हो।
- ज्ञान विस्फोट, जनसंख्या विस्फोट और शिक्षा से बढ़ती अपेक्षाओं के विस्फोट के प्रभावों के प्रति जागरूक हो।
- सही स्रोतों से वांछित सूचनाओं का एकत्रण करना तथा उन्हें शिक्षण की रणनीतियों के लिए प्रसंस्कृत करना जानता हो।
- बदलते समय के अनुरूप अपने उपागम, पद्धति व तकनीकी में नयापन लाने को तत्पर हो।
- स्व–निर्देशित शिक्षा के द्वारा व्यावसायिक उन्नति प्राप्त करने के लिए दृढ़निश्चयी, प्रतिबद्ध एवं दक्ष हो।
- विद्यार्थियों के प्रति अपनी आदर्श भूमिका और समाज के प्रति नये घटनाक्रमों के संचारक के रूप में अपनी स्थिति को पहचानता हो।
- समाजीकरण में उत्प्रेरक के रूप में समाज के सभी व्यक्तियों से सम्पर्क–विनिमय करने की क्षमता रखता हो, संस्थागत कुशलता बढ़ाने में सहायक हो, शिक्षा की बढ़ोत्तरी प्रासंगिकता व उपयोगिता में अपना पूरा योगदान दे सकता हो।

सरकार द्वारा यह निरन्तर प्रयास किया जा रहा है कि अध्यापक शिक्षा का स्तर ऊपर उठे, किन्तु यह प्रयास अपर्याप्त रहे हैं क्योंकि:

- अध्यापक की व्यावसायिक प्रतिबद्धता तथा समग्र दक्षताओं के विकास की स्थिति असन्तोषजनक है।
- शैक्षणिक विज्ञान के अभिनव विकास के अनुरूप अध्यापक की सेवापूर्ण शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार तो नहीं हुआ है। हाँ, गिरावट के संकेत अवश्य ही दिखाई दिए हैं।
- अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम मुख्य रूप से सेवापूर्व शिक्षा तक ही सीमित रह गया है। इसमें व्यावहारिक रूप से सेवाकालीन प्रशिक्षण के लिए किसी भी व्यवस्थित कार्यक्रम के समावेश का अभाव है।
- अध्यापक शिक्षा की अवमानक संस्थाओं में क्रमशः वृद्धि हुई है तथा व्यवस्था में व्याप्त अनेक शिकायतें मिली हैं।
- राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद तथा विश्वविद्यालय के शिक्षा विभागों की आधार व्यवस्था अपर्याप्त है तथा राज्य स्तर से नीचे इस प्रकार की व्यवस्था का पूर्ण अभाव है।

3- विद्यार्थियों के दृष्टिकोण से:

विद्यार्थी भावी कर्णधार होता है, अतः उनका उचित विकास समाज का तथा सम्पूर्ण राष्ट्र का विकास है। भारतीय शिक्षा की विशेषता गुरूकुल रही है जिसमें शिक्षा प्राप्त करने हेतु शिष्य अपना सभी कुछ छोड़कर गुरू के साथ रहता था। गुरूकुल, समाज/समुदाय से अलग एक व्यवस्था होती थी जिसमें शिष्य उन सभी वस्तुओं से दूर रहते थे जो घरों में आसानी से उपलब्ध हो सकती थीं। सादगी तथा अनुशासन के वातावरण में एक समान उद्देश्य जैसे शिक्षा प्राप्त करना तथा गुरू का सानिध्य शिष्यों को अपने लक्ष्य से विचलित नहीं होने देता था। गुरूकुल का कड़ा अनुशासन, शिष्य को उचित व अनुचित माँग में अन्तर करना सिखाता था। गुरूकुल में मन्त्रों के जाप के साथ–साथ मन को वश में करना, इन्द्रियों पर नियन्त्रण करना, काम–क्रोध, मद, लोभ, अभिमान एवं हर्ष आदि से बचना आदि 'ज्ञान' की श्रेणी में आते थे।

गुरू शिष्य सम्बन्ध प्रगाढ़ एवं आत्मीय होते थे। इस सम्बन्ध का आधारण समर्पण और त्याग होता था जिसमें एक विद्वान तथा दूसरा जिज्ञासु तरूण होता था। शिक्षण प्रक्रिया दोनों के मध्य अपनत्व से होती थो। गुरू शिष्य के मस्तिष्क पर नियन्त्रण करता था तथा शिष्य को निर्देशित करता था कि वह गुरू के मस्तिष्क का अनुसरण करते हुए आवश्यतानुसार अनुकूलन करे। इस प्रकार गुरू अपना ज्ञान एवं बुद्धि शिष्य में स्थानान्तरित करता था। अथर्ववेद में गुरू को शिष्य का 'आध्यात्मिक पिता' अर्थात प्रभु भी कहा गया है। अध्ययन के समय दोनों के मध्य आत्मीयता का गहरा सम्बन्ध बनता था। गुरू द्वारा प्रदान ज्ञान अमूल्य, अनमोल एवं अतुल्य होता था जिसका भुगतान शिष्य द्वारा नहीं किया जा सकता था तथा ना ही गुरू इसकी अपेक्षा करता था। शिक्षा समाप्ति के पश्चात् गुरू को आदर व सम्मान प्रदान करने के लिए शिष्य द्वारा गुरू दक्षिणा देने का प्रावधान था। मगर वह गुरू द्वारा प्रदान की गयी शिक्षा का ऋण उतारना नहीं होता था क्योंकि गुरू द्वारा प्रदान की गयी शिक्षा का मोल लगाना असम्भव था। शिष्य धन के अधार पर ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता था। ज्ञान प्राप्त करने के लिए शिष्य को अपने स्वयं का सम्पूर्ण समर्पण करना पड़ता था। अतः शिक्षा का स्तर उच्चतम होता था तथा शिष्य उच्च नैतिक मूल्यों वाले तथा समाजोपयोगी बनते थे। गुरू द्वारा शिष्य में पूर्णता एवं सन्तुष्टि के भाव उत्पन्न किए जाते थे। जिससे वह एक सम्पूर्ण व्यक्तित्व का धनी बनता था तथा जिसका प्रभाव नैतिक मूल्यों के सम्प्रेषण द्वारा समाज के उत्थान के लिए होता था। इस प्रकार शिष्य 'मानस पुत्र' में रूपान्तरित होता था।

4- समाज के दृष्टिकोण से:

राष्ट्र में विद्यालय की दोहरी स्थिति होती है– एक ओर वह सामाजिक नियन्त्रण का साधन है और दूसरी ओर वह स्वयं सामाजिक रूप से नियन्त्रित होता है। विद्यालय समाज पर प्रभाव डालता है और समाज विद्यालय पर। उनमें पारस्परिक निर्भरता का भाव तथा अन्योन्याश्रित सम्बन्ध होता है। अतएव विद्यालय समाज के अनुरूप बनाया जाता है। वह समाज की आवश्यताओं की पूर्ति करता है। विद्यालय समाज का लघु रूप कहलाता है। जिसमें सामाजिक क्रियायें प्रतिबिम्बित होती हैं। विद्यालय व्यक्ति को समाजोपयोगी बनाता है। समाज विद्यालय को सभी प्रकार की सहायता प्रदान करता है। विद्यालय शिक्षा द्वारा समाज में परिवर्तन लाता है और समाज अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप विद्यालय में परिवर्तन करता है। विद्यालय समाज की संस्कृति का संरक्षण ही नहीं करता वरन् उसका संचरण भी करता है और अपनी सर्जनात्मक शक्ति के द्वारा उसे उन्नत करने का भी प्रयास करता है। समुदाय को अपने बच्चों के विकास के लिए विद्यालय स्थापित करने पड़त हैं, आर्थिक सहायता भी देनी पड़ती है, योग्य एवं प्रशिक्षित शिक्षकों की व्यवस्था करनी पड़ती है, स्वास्थ्य के लिए खेलकूद और रोगों की रोकथाम की सुविधायें देनी पड़ती हैं। शैक्षिक उपकरणों तथा साज–सज्जा को जुटाना पड़ता है तथा आर्थिक और सांस्कृतिक विकास के लिए व्यावसायिक और कलात्मक शिक्षा का संगठन करना पड़ता है। परिणामस्वरूप विद्यालय के भी समुदाय के प्रति कुछ कर्तव्य बन जाते हैं। विद्यालय के दो पार्श्व होते हैं–

- एक तो वह अपरिपक्व लोगों के समुदाय को कुशल सदस्यों के रूप में विकसित करता है, उनको समाजोपयोगी शिक्षा देता है।
- दूसरे वह पूरे समुदाय के तात्कालिक लाभ के लिए एक केन्द्र के रूप में कार्य करता है।

पहले का सम्बन्ध तो दैनिक शिक्षण कार्य से है और दूसरे का शाला समय के बाद समुदाय के हित में कार्यक्रमों के संगठन से है जिसके द्वारा समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप जीवन की शिक्षा दी जाती है।

बालक का सामाजीकरण उसके घर से ही आरम्भ हो जाता है। बच्चे के पहले शिक्षक उसके माता–पिता होते हैं जो बालक के सम्पूर्ण विकास का आरम्भ करते हैं। माता–पिता और बालक के बीच के सम्बन्ध बाल विकास में बड़े महत्व के होते हैं। पारिवार ही बालक की पहली पाठशाला होता है जो अविधिक और सविधिक शिक्षा देता है। यहीं शिशु में उन सभी गुणों का बीजारोपण करता है जिनका मूल तत्व सहानुभूति है। यहीं वह बोलना और न्यूनाधिक मात्रा में भाषा को भी सीखता है, सामाजिक तथा धार्मिक भावनाओं का भी विकास होता है।

भारत में शिक्षा का उद्देश्य मानव का सर्वांगींण विकास कर उसे समाज, राष्ट्र एवं विश्व की प्रगति में सहायक कुशल नागरिक बनाना है, तथा प्रजातन्त्रीय शिक्षा व्यवस्था द्वारा व्यक्ति के अन्दर बन्धुत्व की भावना, अवसरों की समानता, स्वतन्त्रता आदि के भाव को जगाना है। किन्तु भावात्मक एकता में बाधक तत्व, वर्ग–भेद, आर्थिक सहिष्णुता, जातिवाद, सम्प्रदायवाद, आर्थिक शोषण आदि इस आदर्श की प्राप्ति में बाधक सिद्ध हो रहे हैं।
शिक्षण योजनायें व शिक्षण प्रक्रिया दुरूह तथा असहाय प्रतीत हो रही है। सर्वत्र बाल केन्द्रित शिक्षा, आनन्ददायी शिक्षा, व्यक्तिगत शिक्षा, सर्वशिक्षा, समाज शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा आदि की अनिवार्यता आवश्यकता के नारे तो बुलन्द कर रहे हैं किन्तु समुचित योजना, कुशल मार्गदर्शन तथा उपयुक्त साधनों के अभाव में कोई प्रगति दिखाई नहीं पड़ रही है। विद्यालयों की संख्या में तेजी से बढ़ोत्तरी हो रही है। किन्तु शिक्षा का गुणात्मक स्तर गिरता ही जा रहा है। शिक्षण कार्य धनोपार्जन का व्यवसाय बन कर रह गया है। उपरोक्त समस्त समस्यायों को जानने एवं उनके पीछे के कारणों को खोजने हेतु ही शोधार्थी ने इस शोध पत्र हेतु अध्ययन का प्रयास किया है।

शोध प्रश्न:
शिक्षा व्यवस्था को लेकर देश में भिन्न–भिन्न विचारों का मंथन किया जा रहा है। बुद्धिजीवी वर्ग इस समस्या से चिन्तित है कि शिक्षा व्यवस्था में क्या परिवर्तन किया जायं कि गुणात्मक शिक्षा विद्यालयों में उपलब्ध हो सके।

भारत में शिक्षा को सर्वव्यापक एवं सर्वसुलभ करने के हर सम्भव प्रयास किए जा रहे हैं। शिक्षा के सर्वव्यापीकरण हेतु कई राष्ट्रीय/ सरकारी योजनायें क्रियान्वित की गयी हैं। समाज के हर वर्ग को शिक्षा के समान अवसर प्राप्त हों, आवश्यकतानुसार जीवन–निर्वाह हेतु रोजगार के अवसर उपलब्ध हों, शिक्षा द्वारा प्रत्येक नागरिक को न केवल व्यक्तिगत स्तर पर बल्कि समुदाय व पूरे समाज के स्तर पर जीवन के स्तर में सुधार करने के अवसर प्रदान हों तथा ऐसा तभी सम्भव हो सकता है जब शिक्षक दक्षतापूर्ण अपने व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्ध हो तथा उसका प्रदर्शन सर्वोत्तम हो। गुणात्मक शिक्षण–प्रशिक्षण का सीधा सम्बन्ध शिक्षकों की दक्षता एवं प्रतिबद्धता से है। अतः शोधार्थी के मन में कतिपय प्रश्न उभरे जो निम्नवत् हैं–

- क्या प्रशिक्षित शिक्षकों में सेवापूर्व अध्यापक शिक्षा के पाठ्यक्रम द्वारा निर्धारित एवं प्रदत्त शिक्षण दक्षतायें सेवारत काल में भी पायी जाती हैं ?
- क्या उनकी शिक्षण दक्षताओं का प्रभाव उनके प्रदर्शन पर पड़ता है?
- क्या प्रशिक्षित शिक्षक अपने व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्ध होते हैं?
- क्या उनकी प्रतिबद्धता का प्रभाव उनके प्रदर्शन पर भी पड़ता है?
- क्या शिक्षकों की दक्षता, प्रतिबद्धता और प्रदर्शन, शिक्षण अनुभव से प्रभावित होते हैं?

शोध समस्या कथन:
माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता एवं प्रतिबद्धता का उनके शिक्षण प्रदर्शन पर प्रभाव का अध्ययन शोध में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण–

शिक्षण दक्षता:
'दक्षता' शब्द का विभिन्न क्षेत्रों एवं विषयों में उपयोग किया जाता है। शिक्षा जगत में शिक्षकों की दक्षता का अनुमान शिक्षक– प्रशिक्षण प्राप्त करने से पूर्व एवं प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् शिक्षकों की क्षमता में आए परिवर्तन से लगाया जाता है।

प्रतिबद्धता:

किसी भी क्षेत्र में कामकाज का व्यावसायिक रूप उस क्षेत्र में सक्रिय लोगों की प्रतिबद्धता पर निर्भर करता है। अध्यापन भी एक व्यवसाय है, इसलिए प्रत्येक शिक्षक के लिए इस व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्ध होना आवश्यक है।

शिक्षण प्रदर्शन:
शिक्षण प्रदर्शन से तात्पर्य शिक्षकों का कक्षा शिक्षण में पदर्शन, सामुदायिक एवं पाठ्य–सहगामी क्रियाओं में प्रदर्शन आदि।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य:
प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं:

1- केन्द्रीय विद्यालय एवं राजकीय विद्यालय की कक्षा दस को पढ़ाने वाले शिक्षकों की दक्षता, प्रतिबद्धता एवं प्रदर्शन के मध्य सह–सम्बन्ध पाया जाता है।
2- केन्द्रीय विद्यालय एवं राजकीय विद्यालय की कक्षा दस को पढ़ाने वाली शिक्षिकाओं की दक्षता, प्रतिबद्धता एवं प्रदर्शन के मध्य सह–सम्बन्ध पाया जाता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन की शोध विधि:
शोधार्थी ने समस्या का सावधानीपूर्वक अध्ययन किया तथा सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन करने के पश्चात् यह निष्कर्ष निकाला कि प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए 'सर्वेक्षण विधि' का चयन उचित है। सर्वेक्षण विधि वर्तमान स्थितियों की प्रकृति का वर्णन विशाल रूप में करती है। साथ ही इस प्रश्न का भी उत्तर देती है कि वर्तमान अवस्था से सम्बन्धित तथ्य एवं वास्तविक तथ्य क्या है? सर्वेक्षण अध्ययन प्रमुखतः घटनाओं, चरों व विशेषताओं की वर्तमान स्थितियों का वर्णन करते हैं। किसी विशिष्ट मानव समुदाय, किसी संस्था, किसी परिपाटी, नीति एवं योजना की आलोचनात्मक ढंग से व्याख्या करना या इनके वर्तमान स्तर की किसी मानक के साथ तुलना करके सुधार हेतु सुझाव देना सर्वेक्षण का उद्देश्य होता है। अतः शोध की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी द्वारा 'सर्वेक्षण विधि' का चयन किया जाना उचित समझा गया।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण:
प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों की शिक्षण दक्षता एवं प्रतिबद्धता का उनके प्रदर्शन क्षेत्र पर प्रभाव का अध्ययन करना है। इस अध्ययन में तीन चरों का परीक्षण महत्वपूर्ण है– शिक्षकों की दक्षता, प्रतिबद्धता एवं प्रदर्शन।
प्रशिक्षित शिक्षकों की दक्षता के परीक्षण हेतु 10 क्षेत्रों, पतिबद्धता हेतु 05 क्षेत्रों एवं प्रदर्शन हेतु 05 क्षेत्रों का निर्धारण किया गया है। उक्त क्षेत्रों में परीक्षण हेतु मानकीकृत उपकरण उपलब्ध नहीं होने के कारण स्वनिर्मित उपकरणों का निर्माण किया गया। उपकरणों की विश्वसनीयता एवं वैद्यता जाँचने के पश्चात् इनका प्रशासन प्रदत्तों के संग्रहण हेतु किया गया। स्वनिर्मित उपकरणों का विवरण निम्नवत् है–

1- शिक्षक दक्षता मापनी:
इस मापनी का निर्माण प्रशिक्षित शिक्षकों की दक्षता के दस क्षेत्रों– सांदर्भिक अवधारणातमक, वस्तुपरक, कार्य–निष्पादन, अन्य शैक्षणिक गतिविधियाँ, अध्ययन सामग्री तैयार करना, मूल्यांकन, प्रबन्धन, अभिभावकों से सम्पर्क व सहयोग एवं समुदाय से सम्पर्क व सहयोग के परीक्षण हेतु किया गया। प्रत्येक क्षेत्र से सम्बन्धित 16 कथनों का निर्माण करते हुए कुल 160 कथनों की मापनी का निर्माण किया गया। प्रत्येक कथन के लिए तीन विकल्प दिए गए– 1. सहमत 2. असहमत 3. अनिश्चित। कथनों को पढ़कर इन तीनों विकल्पों में से शिक्षकों को एक विकल्प पर सही का निशान लगाकर अपना अभिमत देना था।

2- शिक्षक प्रतिबद्धता मापनी:

इस मापनी का निर्माण प्रशिक्षित शिक्षकों की प्रतिबद्धता के पाँच क्षेत्रों– विद्यार्थियों के प्रति, समाज के प्रति, व्यवसाय के प्रति, उत्कृष्टता के प्रति एवं मानवीय मूल्यों के प्रति परीक्षण हेतु किया गया। प्रत्येक क्षेत्र से सम्बन्धित 16 कथनों का निर्माण करते हुए कुल 80 कथनों की मापनी का निर्माण किया गया। प्रत्येक कथन के लिए तीन विकल्प दिए गए– 1. सहमत 2. असहमत 3. अनिश्चित। कथनों को पढ़कर इन तीनों विकल्पों में से शिक्षकों को एक विकल्प पर सही का निशान लगाकर अपना अभिमत देना था।

3- शिक्षक प्रदर्शन मापनी:

इस मापनी का निर्माण प्रशिक्षित शिक्षकों के प्रदर्शन के पाँच क्षेत्रों – कक्षा में, विद्यालयों में, विद्यालय के बाहर की गतिविधियों में, अभिभावकों से सम्पर्क एवं सहयोग में, समुदाय से सम्पर्क एवं सहयोग में आदि के परीक्षण हेतु किया गया। प्रत्येक क्षेत्र से सम्बन्धित 16 कथनों का निर्माण करते हुए कुल 80 कथनों की इस मापनी का निर्माण किया गया। प्रत्येक कथन के लिए तीन विकल्प दिए गए– 1. सहमत 2. असहमत 3. अनिश्चित। कथनों को पढ़कर इन तीनों विकल्पों में से शिक्षकों को एक विकल्प पर सही का निशान लगाकर अपना अभिमत देना था।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित सांख्यिकीय विधियों का प्रयाग किया गया है–

1- मध्यमान

2- सह–सम्बन्ध

प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण, विश्लेषण एवं निष्कर्ष:

शोध कार्य हेतु संकलित आँकड़ों को क्रमबद्ध, वर्गीकृत एवं सुव्यवस्थित करते हुए सारणीयन किया गया है। संकलित सामग्री पर उचित सांख्यिकी विधियों का प्रयोग करते हुए निम्नानुसार निष्कर्ष प्राप्त किए गए–

केन्द्रीय विद्यालय, राजकीय विद्यालय की कक्षा दस को पढ़ाने वाले शिक्षकों की दक्षता, प्रतिबद्धता एवं प्रदर्शन के मध्यमान एवं सह–सम्बन्ध

क्षेत्र	चर	न्यादर्श	मध्यमान	त	सह–सम्बन्ध
केन्द्रीय विद्यालय के पुरूष शिक्षक	पुरूष शिक्षकों का प्रदर्शन	100	229.19	0.42	सामान्य
	पुरूष शिक्षकों की दक्षता	100	112.26		
राजकीय विद्यालय के पुरूष शिक्षक	पुरूष शिक्षकों का प्रदर्शन	100	120.87	0.51	सामान्य
	पुरूष शिक्षकों की दक्षता	100	112.37		

उपरोक्त सारणी में दर्शाया गया है कि केन्द्रीय विद्यालय के कक्षा दस को पढाने वाले पुरूष शिक्षकों की दक्षता एवं उनके प्रदर्शन के मध्य सह–सम्बन्ध का मान 0.42 पाया गया जो सामान्य स्तर का है। साथ ही राजकीय विद्यालय के कक्षा दस को पढ़ाने वाले पुरूष शिक्षकों की दक्षता एवं उनके प्रदर्शन के मध्य सह–सम्बन्ध का मान 0ण्51 पाया गया, जो सामान्य स्तर का है। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि केन्द्रीय विद्यालय तथा राजकीय विद्यालय की कक्षा दस को पढ़ाने वाले पुरूष शिक्षकों की दक्षता का उनके प्रदर्शन पर सामान्य प्रभाव पड़ता है।

केन्द्रीय विद्यालय, राजकीय विद्यालय की कक्षा दस को पढ़ाने वाले शिक्षिकाओं की दक्षता, प्रतिबद्धता एवं प्रदर्शन के मध्यमान एवं सह–सम्बन्ध

क्षेत्र	चर	न्यादर्श	मध्यमान	त	सह–सम्बन्ध

केन्द्रीय विद्यालय के शिक्षिकायें	शिक्षिकाओं का प्रदर्शन	100	224.32	0.74	उच्च
	शिक्षिकाओं की दक्षता	100	113.24		
राजकीय विद्यालय के शिक्षिकायें	शिक्षिकाओं का प्रदर्शन	100	227.78	0.47	सामान्य
	शिक्षिकाओं की दक्षता	100	116.91		

उपरोक्त सारणी में दर्शाया गया है कि केन्द्रीय विद्यालय के कक्षा दस को पढ़ाने वाली शिक्षकाओं की दक्षता एवं उनके प्रदर्शन के मध्य सह–सम्बन्ध का मान 0ण्74 पाया गया जो उच्च स्तर का है। साथ ही राजकीय विद्यालय के कक्षा दस को पढ़ाने वाली शिक्षकाओं की दक्षता एवं उनके प्रदर्शन के मध्य सह–सम्बन्ध का मान 0ण्47 पाया गया, जो सामान्य स्तर का है। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि केन्द्रीय विद्यालय की कक्षा दस को पढ़ाने वाली शिक्षिकओं की दक्षता का उनके प्रदर्शन पर उच्च स्तर का प्रभाव पड़ता है। किन्तु राजकीय विद्यालयों में पढ़ाने वाली शिक्षिकाओं की दक्षता का उनके प्रदर्शन पर सामान्य स्तर का प्रभाव पड़ता है।

प्रस्तुत शोध के शैक्षिक निहितार्थ:
इस बात को नकारा नहीं जा सकता कि कई शिक्षक शिक्षण व्यवसाय के प्रति किसी मोह या आन्तरिक प्रेरणा के द्वारा नहीं बल्कि परिस्थितियों के दबाव के कारण इस व्यवसाय में आते हैं। किन्तु इस व्यवसाय में आने के बाद उन्हें इस बात को पूरी तरह से समझ लेना चाहिए कि जब तक वे इस व्यवसाय में हैं, उन्हें इसके प्रति गारव का भाव विकसित कर लेना है क्योंकि यह एक सम्मानजनक व्यवसाय है। जिसमें समाज अपने बच्चों को सम्पूर्ण शिक्षा, विकास व समाजीकरण के लिए उन्हें सौंपता है। शिक्षकों में स्वयं के शिक्षण व्यवसाय में होने पर गर्व होना चाहिए और उनमें शिक्षा विकास के प्रति दृढ़ इच्छा शक्ति का होना भी आवश्यक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

1- एण्डरसन गैरी (1997) 'फण्डामेन्टल्स ऑफ एजूकेशनल रिसर्च' लन्दन, फॉलमर प्रैस।
2- एण्डरसन लॉरिन (2001) 'इन्क्रीजिंग टीचर इफैक्टिवनैस' II एडीशन, पेरिस, यूनेस्को।
3- ब्लेस, जोजफ (1992) 'ब्रिंगिंग आउट द बेस्ट इन टीचर्स' कैलीफोर्निया कॉरविन प्रैस।
4- डीन, जे0 (1991) 'प्रौफेशनल डवलपमेण्ट इन स्कूल्स' मिल्टन केयनीस– ओपन यूनिवर्सिटी प्रैस।
5- ग्लासगो, ए0 (2003) 'व्हाट सक्सेसफुल टीचर डू' कैलिफोर्निया– सैंग।
6- ओस्टरहाफ, सी0 (2005) 'क्लासरूम एप्लीकेशन्स ऑफ एजूकेशनल मेजरमेण्ट' मेरिल पब्लिशिंग कम्पनी, ओहियो।
7- सिंह, आर0पी0 (1996) 'फ्यूचर क्लास रूम इन इण्डिया' न्यू दिल्ली, विकास पब्लिशिंग।